दिमागी चोट का इलाज

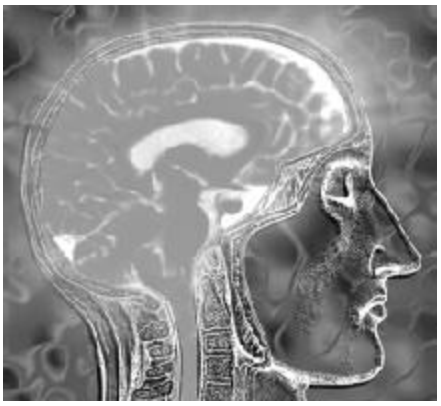

दिमागी चोट का असर कम करने की एक नई तकनीक के आसार बन रहे हैं। शोधकर्ताओं ने कुछ प्रयोग किए हैं जिनसे यह आशा बंधी है कि दिमागी कोशिकाओं की झिल्ली में हुए पंचर की मरम्मत की जा सकेगी। यह विधि लगभग सायकिल ट्यूब का पंचर सुधारने जैसी ही है।

जब दिमाग को किसी भोंथरे हथियार से चोट लगती है, तो कई बार अंदर की कोशिकाएं फट जाती हैं। इनकी मरम्मत न हो, तो कई सारे हानिकारक रसायन अंदर चले जाते हैं। पर्ड्यू विश्वविद्यालय के रिचर्ड बोर्जेन्स ने चूहों पर किए गए अपने प्रयोगों में पाया गया कि एक सामान्य-सा पदार्थ पोली एथिलीन ग्लायकॉल इन कोशिकाओं की मरम्मत में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

हाल ही में जर्नल ऑफ बायोलॉजिकल इंजीनियरिंग में प्रकाशित अपने शोध पत्र में बोर्जेन्स ने बताया है कि पोली एथिलीन ग्लायकॉल के उपयोग से दिमागी चोटग्रस्त चूहों को वापिस सामान्य होने में मदद मिलती है।

इस प्रयोग में सबसे पहले एक निश्चित वज़न सिर पर गिराकर 47 चूहों को नपी-तुली चोट पहुंचाई गई। इसके बाद इन चोटग्रस्त चूहों के चार समूह बनाए गए। प्रथम तीन समूहों के चूहों को चोट लगने के क्रमशः 2, 4 व 6 घंटे बाद पोली एथिलीन ग्लायकॉल का इंजेक्शन दिया गया जबकि चौथे समूह को कोई उपचार नहीं मिला। इतना करने के बाद सारे चूहों को एक पिंजड़े में रख दिया गया और इनके व्यवहार का अध्ययन किया गया। यह देखने की कोशिश की गई कि चोट लगने के तीन दिन बाद, एक सप्ताह बाद और एक माह बाद इनमें से कितने सामान्य व्यवहार की ओर लौटते हैं। खास तौर से यह देखा गया कि ये कितनी दूरी तक चल पाते हैं और किस रफ्तार से।

प्रयोग से पता चला कि पोली एथिलीन ग्लायकॉल उपचार कारगर रहता है, बशर्ते कि यह इंजेक्शन चोट लगने के चार घंटे के अंदर-अंदर दे दिया जाए। यदि इंजेक्शन 6 घंटे बाद दिया जाए तो चूहों को सामान्य स्थिति में लौटने में कोई मदद नहीं मिलती।

अभी इस उपचार के इन्सानों पर असर के बारे में कुछ भी कहना जल्दबाज़ी होगी मगर शोधकर्ताओं को लगता है कि यदि यह इन्सानों में कारगर साबित होता है, तो राहतकर्मी दलों का पहला काम यह हो सकता है कि दिमागी चोटग्रस्त व्यक्तियों को मौके पर ही पोली एथिलीन ग्लायकॉल का इंजेक्शन दे दें। शोधकर्ता इसी दृष्टि से अब इस उपचार का परीक्षण इन्सानों पर करने की योजना बना रहे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***